शोध प्रतिवेदन

"माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का एंव शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. एकता पारीक
(प्राचार्या)

प्रस्तुतकर्त्री
संगीता मिश्रा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

1 प्रस्तावना

शिक्षा राष्ट् की उन्नति का अन्नयतम साधन है। तथा उसके व्यक्तित्व के विकास में योगदान करती है। शिक्षा बालक की अर्न्तनिहित शक्तियों को उभार कर उन्हें पूर्ण करती है। यह वह ज्ञान है जिसके प्रकाश में बालक स्वंय अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। अन्य शब्दों में बालक के बन्दर निहित प्रकृति प्रदत शक्तियॉ बीज रुप में पनपती हैं। इन बीज रुपी प्रकृति प्रदत शक्तियों को दक्ष रुप में विकसित करने में सहायक होती है। सामान्य अर्थ में शिक्षा का अर्थ औपचारिक शिक्षा से ही लगाया जा सकता है। बालक जन्म से ही परिवार में भाषा, रहन–सहन, खान–पान रीति रिवाज आदि इन सभी चीजों के बिना वह समाज के सदस्य के बीच अपनी उपर्युक्तता साबित करने में असमर्थ रह जाता है। अतः परिवार का बालक के लिए महत्तवपूर्ण स्थान है क्योकि धीरे धीरे परिवार में ही बालक का समाजीकरण होता है। परिवार के बाद बालक का स्थान महत्तवपूर्ण माना जाता है। यह बालक को समाज का वास्तविक सदस्य बनाती है। वस्तुत वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय ही एकमात्र साधन है जो लोकतात्रिक समाजवादी प्रतिमानों के अनुसार

विद्यार्थियों का विकास करती है। अतः भारतीय सामाजिक व्ववस्था के अर्न्तगत विद्यालय का महत्तवपूर्ण स्थान है। इसलिये परिवार की परिस्थितियों , विद्यालय वातावरण, एकाग्रता मूल्याकंन आदि का विद्याार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा पभाव पड़ता है।

अधिगम परिस्थितियों को सुगम बनाने में विषय वस्तु के बारे में कक्षा शिक्षण से पूर्व बअध्ययन करना , विद्यालय में नियमितता, कक्षा में प्रश्न करना, शिक्षकों से परामर्श करना , पुस्तकालय को नियमित जीवन का अंग बनाना , गृहकार्य करना, स्चमूल्याकंन शिक्षां के प्रति अभिवृति, अध्यापक के प्रति अभिवृति अध्ययन आदतें आदि कारक महत्तवपूर्ण होते है। जो शिक्षक शैक्षिक उपलब्धि की दर को संधारित करते है।

शिक्षा का उद्देश्य अच्छी आदतो से युक्त चरित्रवान व्यक्तियों का निमार्ण करना है। मानव में दो प्रकार की प्रवृतियॉ पाई जाती है जन्मजात और अर्जित। आदत का आधार अर्जित किया है जो वातावरण में विकसित होती है। जिस कार्य को हम बारम्बार करते है वह हमारी आदत बन जाती है। व्यवहारवादियो। का कथन है कि आदत का आधार उद्दीपन अनुक्रिया सिद्वान्त है।

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को विकसित नितान्त आवश्यक है जिससे बालकों के व्यक्तित्व एंव चरित्र का विकास हो सके। जहॉ तक आदतों तथा शिक्षा का सम्बन्ध है निसंदेह शिक्षा की आदतों के निमार्ण में महत्तवपूर्ण भूमिका है। अध्यापक एंव विद्यालय का योगदान बालक – बालिकाओं की आदतों के निमार्ण में सर्वोपरि है। श्रेष्ठ अध्ययन आदतों एंव मनोवृतियों को विद्याार्थियों में पल्लवित करके उच्च शैक्षिक उपलब्धियो विद्यालय का समूह विकसित किया जा सकता है। सम्पादित शोध कार्य का यही आधार है।

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एंव शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान अभिभावक, शिक्षक एंव संस्था प्रधान सभी के लिए उपयागी है। शिक्षक ओर संस्था प्रधान इसे वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार पर विद्यार्थियो को उचित निर्देश व परामर्श दे सकते है।आदतों के अध्ययन द्वारा वे विद्यार्थियों के अधिगम में आने वाली कठिनाइयों का भी समाधान दे सकते है।

अतः माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शिक्षको के प्रति अभिवृति, विद्यालय एंव गृी वातावरण के प्रति अभिवृति, एकाग्रता, आत्मविश्वास, मानसिक संघर्ष एंव मूल्याकंन के प्रति अभिवृतियॉ एंव अध्ययन आदतों का अध्ययन करनेके लिए यह कार्य सम्पादित किया गया है। इस शोध अध्ययन में सरकारी और गैर सरकारी छात्र ओर छात्राओं के चरों को लेकर उनकी अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया।

अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि की परस्पर पूरकता को जानने हेतु यह शोध अध्ययन सम्पादित किया गया जिसे सार रुप में इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

2 शोध कार्य का विश्लेषण –:

सम्पूर्ण शोध कार्य का विश्लेषण के पश्चात् जब प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण कर लिया जाता है तब समग्र कार्य के मूल्याकंन की आवश्यकता पड़ती है। मूल्याकंन की इस आवश्यकता को पूरा करने के क्रम में सम्पूर्ण शोध कार्य का सार प्रस्तुत किया जाता है। यह सार या निष्कर्ष अमृत मथंन के समान सम्रग अध्ययन का निचोड़ होता हैं। यह सार अन्य अध्येताओं के लिये गागर में सागर का कार्य करता है। किसी भी अनुसंधान कार्य को अनुसंधान का एक आवश्यक अंग है। निष्कर्ष से ही हमे यह पता चलता है कि पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति करना समीचीन होगा। किसी भी शोध अध्ययन की उपयोगिता को जानने के लिये उस शोध का यह भाग सबसे ज्यादा उपयोगी व पढ़ा जाने वाला होता है।

3 शोध कार्य का निष्कर्ष :–

निष्कर्ष अनुसंधान को पूर्णता प्रदान करती है। इनके अभाव में शोध कार्य अपूर्ण रहता है व्यवहारिक विज्ञान में अनुसंधानकर्ता का पूर्णत सावधान रहना चाहिये कि उसके निष्कर्ष पूर्णतः सावधान रहना चाहिए कि मौलिक है अथवा नहीं, क्योंकि कभी कभी परिणाम कुछ अवधारणा पर आधारित होते है। ऐसे परिणाम कभी पूर्ण नहीं होते है।

अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को संक्षिप्त कर निष्कर्षों के लिये अनुमोदित करना अनुसंधान का अन्तिम चरण माना जाता है। अनुसंधान प्रक्रिया में दो प्रकार की महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है।

यह अनुसंधानरत व्यक्तियों के लिये अनुसंधानकर्ता की समस्या के सन्दर्भ में अनुभूति प्रदान करता है। सामान्यतः यह निष्कर्षो के भविष्य में प्रयोगात्मक अनुसंधानों के लिये काफी विस्तृत कार्य करता है। साथ ही भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिये सामान्य उद्देश्य , निष्कर्ष एंव ज्ञान हेतु सहायता प्रदान करता है।

भावी अनुसंधानकर्ता अपने समय की बचत करते हुए किसी भी शोध के निष्कर्ष अथवा सार को पढ़कर ही उसकी उपयोगिता को समझ सकता है।

4 समस्या कथन

"माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का एंव शैक्षिक उपलब्धि से सहसम्बन्ध का अध्ययन"

5 अध्ययन के उद्देश्य

अतः शोध कार्य की सफलता हेतु शोधकर्त्री द्वारा निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

1- गैर सरकारी माध्यमिक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना

2- सरकारी माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3- गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

4- सरकारी वमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

5- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

6- सरकारी गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

7- सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

6 अध्ययन की परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थंक सहसम्बन्ध नहीं हैं
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थंक सहसम्बन्ध नहीं हैं
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थंक सहसम्बन्ध नहीं हैं
4. सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थंक सहसम्बन्ध नहीं हैं
5. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्यम में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं
6. सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतों के प्रान्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।
7. सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्यमानों में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।
8. सरकारीमाध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।
9. गैरसरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।
10. सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।
11. सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।

7 अनुसंधान की विधियॉ–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

8 न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रुप में जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय के दो सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया हैं। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक रुप से किया जाएगा।

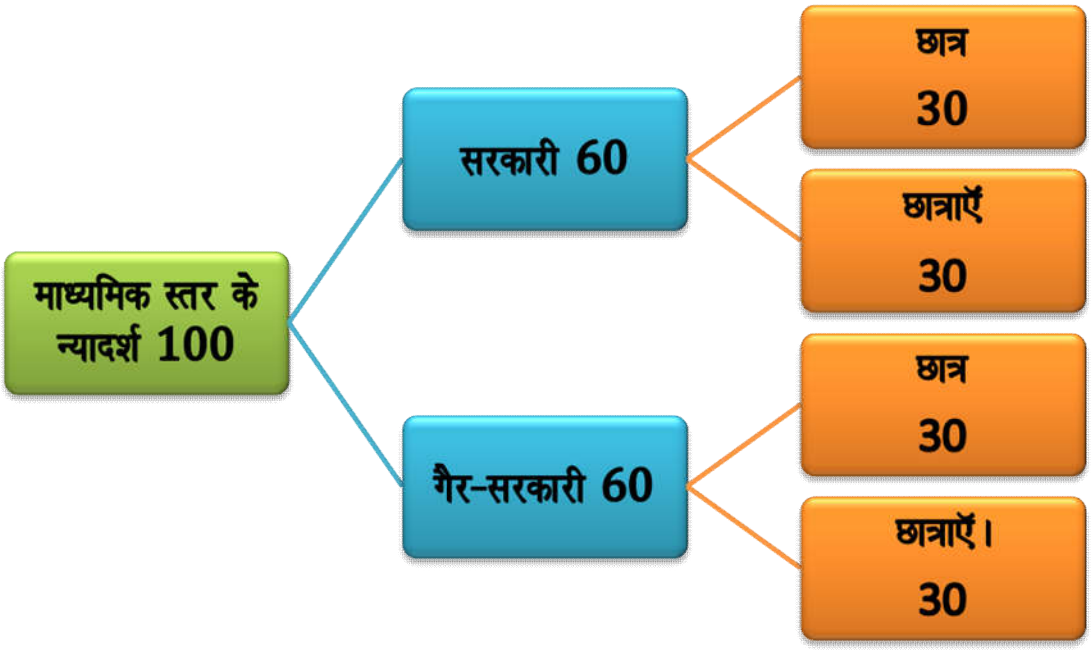

9 अध्ययन के उपकरण–

अध्ययन सम्बन्धी आदतों के अध्ययन हेतु स्वनिर्मित अध्ययन मापनी का प्रयोग में ली गई। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु विद्यालय अभिलेख से प्राप्तांक प्राप्त किये जाएगे।

10 अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पना का निष्कर्ष :–

- **परिकल्पना 1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं**

परिकल्पना संख्या 4.1में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ो को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के पिद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 404 और शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 264 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.72 है। अतः माध्यमिक स्तर के

पिद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एंव शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक उच्च सहसम्बन्ध है।

उपयुक्त रेखाचित्र में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है इसमें माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान कुल 621 है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः पकिल्पना 1 में माध्यमिक स्तर के विद्याार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध पाया जाता है यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है इसका कारण है कि माध्यमिक स्तर के विद्याार्थियों की अवस्था किशोरावस्था होती है। इस अवस्था में ही उनके विचारों में संर्घष भाव की स्थिति होती है इस कारण उनमें अच्छी अध्ययन आदतों का विकास करना सम्भव नहीं होता है। इसका असर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। इसलिए उनमें सहसम्बन्ध पाया जाता है।

- **परिकल्पना 2 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं**

परिकल्पना संख्या4.2 में माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी पिद्यालय विद्यार्थियों अध्ययन आदतों के तुलनात्मक आकड़ो को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के पिद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 200 और गैर सरकारी का मध्यमान 204 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.37 है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी ओर गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अर्न्तगत धनात्मक निम्नसहसम्बन्ध है।

उपयुक्त रेखाचित्र में माध्यमिक विद्यालय के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को दर्शाया गया है इसमें माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान कुल 621 है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः परिकल्पना 2 में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया है अत :यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती

है। इसका कारण यह है कि माध्यमिक स्तर के विद्याथियों की अध्यनन आदतों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है ताकि उनके चरित्र एंव व्यक्तित्व का विकास किया जा सके। जिन बालकों में अध्ययन सम्बन्धी अच्छी आदतों का विकास नहीं होता है। इसका असर उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है

- **परिकल्पना 3 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं**

परिकल्पना संख्या4.3 में माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी पिद्यालय विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ो को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 140 और गैर सरकारी का मध्यमान 126 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.02 है। अतः माध्यमिक स्तर के सरकारी ओर गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थ्यिों की शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक नगण्य सहसम्बन्ध है।

उपयुक्त रेखाचित्र में माध्यमिक विद्यालय के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है इसमें माध्यमिक स्तर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान कुल 263 है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों कीशैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः परिकल्पना 3 मे माध्यमिक स्तर के विद्याार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसमब्ध पाया गया है अत : यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि विद्याथ्रियो के शिक्षा के स्तर को उच्च बनाने हेतु और स्वमूल्याकंन करने हेतु शैक्षिक उपलबि का ज्ञान करने हेतु आवश्यक है। इसका कारण सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय में विद्यालय में अनियमितता है

- **परिकल्पना 4 सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं**

परिकल्पना संख्या4.4में सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ो को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के पिद्यार्थियों की

अध्ययन आदतों का मध्यमान 200 और शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 126 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.29 है। अतः सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एंव शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्म्क निम्न सहसम्बन्ध है।

उपयुक्त रेखाचित्र में सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है इसमें सरकारी विद्यालय के छात्र और छात्राओं का मध्यमान कुल 326 है। इससे स्पष्ट होता है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः परिकल्पना 4 में सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। सरकारी छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि में निम्न सहसम्बन्ध पाया जाता है। इसका कारण यह है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का सामाजिक, आर्थिक व नैतिक वातारण ठीक नहीं होता है इस कारण उनमें अच्छी आदतों का विकास नहीं होता है शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न होता है।

- **परिकल्पना :–5 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्यम में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं**

परिकल्पना संख्या4.5 में गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ो को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 172 और शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 172 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.76 है। अतः गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के पिद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एंव शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक नगण्य सहसम्बन्ध हैं।

उपयुक्त रेखाचित्र में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में गैर सरकारी विद्यालय के छात्र और छात्राओं का मध्यमान कुल 344 है। इससे स्पष्ट

होता है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

परिकल्पना 5 में यह ज्ञात हुआ है कि गैर सरकारी विद्यालय की विद्यालय के विद्याार्थियो। की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है। यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि गैर सरकारी विद्यालय के विद्याार्थियों के घर का वातावरण और उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी होने के कारण उनमें मानसिक संघर्ष कम होता है। इस कारण उनमें अध्ययन के प्रति अच्छी आदतों का विकास हो पाता है और वह अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रख पाते है। उनकी विद्यालय में नियमितता और एकाग्रता भी अधिक होती है। इसके कारण उनकी अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है

परिकल्पना 6 सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्यं में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

परिकल्पना संख्या4.6 में सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ो को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के पिद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान 172 और शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 172 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.76 है। अतः सरकारी ओर गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्रों की अध्ययन आदतों एंव शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक उच्च सहसम्बन्ध हैं।

उपयुक्त रेखाचित्र में सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कुल 335 है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी ओर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः परिकल्पना 6 सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध पाया जाता है अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण सह है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण उन्हे पढ़ाई के अतिरिक्त अपने माता पिता की सहायता हेतु अन्य कार्य भी करना पड़ता है। अत : इसका प्रभाव उनकी अध्ययन आदतों पर पड़ता है और उनका शैक्षिक स्तर कम हो जाता है। जबकि गैर सरकारी विद्यालय के छात्रों का अध्ययन सम्बन्धी वातावरण अप्छा होता है। उनमें अध्ययन के प्रति एकाग्रता होती है। इस कारण उनकी अध्ययन आदतों के साथ साथ शैक्षिक स्तर भी उच्च हो जाता है।

- **परिकल्पना :–7 सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्यमानों में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।**

परिकल्पना संख्या4.7 में सरकारी एंव गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ों को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान 163 और शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 172 है। इनमें सहसम्बन्ध की गण्ना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.76 है। अतः सरकारी ओर गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्राओं की अध्ययन आदतों एंव शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक मध्य सहसम्बन्ध हैं।

उपर्युक्त रेखाचित्र में राजकीय माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कुल 335 है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी ओर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओ की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि

सरकारी विद्यालय की छात्राओं को अध्ययन के साथ साथ घरेलु कार्य भी करना पड़ता है। इस कारण उनकी अध्ययन सम्बन्धी आदतों जैसे कि विद्यालय की नियमितता , एकाग्रता, गृहकार्य, स्वमूल्याकंन आदि का विकास सही प्रकार नहीं हो पाता है। इसलिए सरकारी की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

- **परिकल्पना :–8सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।**

परिकल्पना संख्या4.8 में सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के तुलनात्मक आकड़ों को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्रो की अध्ययन आदतों का मध्यमान 100 और सरकारी विद्यालय की छात्राओं के मध्यमान 100 है। इनमें सहसम्बन्ध की गण्ना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.005 है। अतः सरकारी माध्यमिक स्तर के पिद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के अर्न्तगत धनात्म्क नगण्य सहसम्बन्ध हैं।

उपर्युक्त रेखाचित्र में सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की अध्ययन आदतों को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कुल 200 है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओ की अध्ययन आदतों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि सरकारी विद्यालय की छात्राओं की अपेक्षा छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि अधिक उच्च होती है। वह विद्यालय में नियमितता कक्षा शिक्षण से पूर्व अध्ययन करना आदि अध्ययन आदतों प्रति सजग होती है। जबकि छात्र अध्ययन के प्रति नीरस होते है।

- **परिकल्पना :–9 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।**

परिकल्पना संख्या4.9 में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के तुलनात्मक आकड़ों को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्रो की अध्ययन आदतों का मध्यमान 102 और गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के मध्यमान 102 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.54 है। अतः गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों के अर्न्तगत धनात्मक मध्यम सहसम्बन्ध हैं। उपर्युक्त रेखाचित्र में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की अध्ययन आदतों को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों का मध्यमान कुल 200 है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओ की अध्ययन आदतों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की अध्ययन आदतों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि गैर सरकारी विद्यालय के छात्र ओर छात्राओं की अध्ययन आदतों में बहुत कम मात्रा में अन्तर पाया जाता है। वह अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है। इसलिए उनकी शैक्षिक उपलब्धि स्तर उच्च होता है।

- **परिकल्पना :–10सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।**

परिकल्पना संख्या4.10 में सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ों को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 63 और गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के मध्यमान 63 है। इनमें सहसम्बन्ध की गणना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.50 है। अतः सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक मध्य सहसम्बन्ध हैं।

उपर्युक्त रेखाचित्र में सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। लेखाचित्र में सरकारी माध्यमिक विद्यालय

के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कुल 129 है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका कारण यह है कि सरकारी विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक होती है क्योकि छात्राएँ हर वातावरण में रहकर भी सांमजस्य कर लेती है। उनका घर का वातावरण ठीक ना होने पर भी वह अपने अध्ययन के प्रति नियमितता रखनें के कारण उपका शैक्षिक स्तर उच्च रहता है। जबकि छात्र जल्दी ही उतेजना में आकर अध्ययन के प्रमि नकारात्मक दृष्टिकोण को अपना लेते हे।

- **परिकल्पना :–11 सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्ताकों के मध्य में सार्थक सहसम्बन्ध में नहीं है।**

परिकल्पना संख्या4.11 में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक आकड़ों को दर्शाया गया है। इसके अवलोकन से ज्ञात हुआ है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 70 और गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं के मध्यमान 70 है। इनमें सहसम्बन्ध की गण्ना करने पर सहसम्बन्ध गुणांक 0.42 है। अतःगैर सरकारी माध्यमिक स्तर के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के अर्न्तगत धनात्मक मध्यम सहसम्बन्ध हैं।

उपर्युक्त रेखाचित्र में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय की छात्र और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाया गया है। गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कुल 129 है। इससे स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों और छात्राओ कीशैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः शून्य परिकल्पना गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता है। इस परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इसका कारण यह कि गैर सरकारी

विद्यालय के छात्र और छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि सामान्य स्तर की होती है। उन पर घरेलु दबाब कम होने के कारण उसका शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होता है। छात्र और छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में साधारण सम्बन्ध पाया जाता है। ।

11 प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ :–

किसी अनुसंधान की सार्थकता तभी होती है जबकि वह समाज के लिए अपयोगी है यदि किसी अनुसंधान के लिए उपयोगी है। यदि किसी अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में अपयोगिता न हो तों उसमें समय व धन खर्च करना व्यर्थ होता है।

1. शिक्षकों के हेतु उपयोग :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 व राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में विद्याार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्विक एंव आत्मिक रुप से चहुॅमुखी विकास पर बल दिया जाता है। राजस्थान के शैक्षिक विकास की दृष्टि से विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों और अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न कारकों के बारे में शिक्षकां की जानकारी होना आवश्यक ही नहीं उपयोगी है। प्रस्तुत शोध कार्य से ज्ञात हुआ है कि विद्यालय के राजकीय और अराजकीय विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों काशैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव होता है। शोध निष्कर्षो से यह सिद्व हुआ है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्ध है। अतः शिक्षक विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। साथही विद्यार्थियों की शिक्षक के प्रति अभिवृति, विद्यालय गृहकार्य एंव मूल्याकंन के प्रति जानकारी प्राप्त कर शिक्षक उन्हें व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरुप शिक्षण प्रदान कर सकता है।

2. विद्यार्थियो हेतु उपयोग :–

विद्यार्थियों को उचित निर्देशन एंव परामर्श प्रदान करने में भी शोध के निष्कर्ष उपयोगी है। संस्था प्रधान छात्र एंव छात्राओं की आदतों व अभिवृतियों , विभिन्न आयामों का ज्ञान प्राप्त कर उन्हें उचित वातावरण प्रदान कर सकता है।

3. अभिभावकों हेतु उपयोग :–

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष अभिभावकों के लिये भी उपयोगी है। अभिभावकों के लिए भी उपयोगी है। अभिभावक अपने बालक या बालिका कीअध्ययन आदतें व शैक्षिक

उपलब्धि को जानकर उन्हें उचित दिशा प्रदान कर सकते है, साथ ही आवश्यक होने पर अध्ययन आदतों को पारिमार्जित भी कर सकते है। बच्चों में अच्छी आदतों को विकसित करनें में सर्वाधिक योगदान दे सकते है। अतः यह शोध अध्ययन अभिभावक को बालकों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए महत्तव पूर्ण है।

4. प्रशासकों हेतु उपयोगी :–

सुसभ्य व सुसंस्कारित नागरिक एक देश की नींव होते है। विद्यालय के प्रशासक को विद्यालय में अनुशासन,सहभागिता और शांतिपूर्ण वातावरण का निमार्ण करना चाहिए। उन्हे अपने विद्यालय में निपुण शिक्षकों की नियुक्ति करनी चाीिए ताकि वह वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार पर उनमें अव्छी आदतों का विकास कर सके और इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में प्रशासक वर्ग की प्रेमपूर्ण और अनुशासित व्यवहारके द्वारा वे अध्ययन सम्बन्धी अव्छी आदतों का विकास कर सकेगे। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि के स्तर में सुधार कर सक्रेगे।

5. समाज हेतु उपयोगी :–

राष्ट् की उन्नति व विकास की जिम्मेदारी विद्याार्थी वर्ग की होती है। इसलिए समाज को भी विद्याार्थियो की अध्ययन आदतों का विकास करने में सहायता करनी चाहिए ताकि उनका शैक्षिक उपलब्धि के स्तर बढ़ाया जा सकेगा। प्रस्तुत शोध में प्रबुद्व वर्ग में समाज की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन आदतों के प्रति जागरुकता को प्रोत्साहन मिल सकेगा।

पिद्यार्थियों की एकाग्रता मानसिक संर्घष, गृहकार्य मूल्याकंन के प्रति अध्ययन आदतों के निष्कर्ष शिक्षाविद् एंव नीति निर्माताओं को भी भावी योजनाओं के निमार्ण में दिशा प्रदान करेगें। , अतः इस दृष्टि से शोध कार्य की शैंक्षिक उपादेयता महत्तवपूर्ण है।

12 भावी शोध हेतु सुझाव :–

शोध कार्य करते समय शोधकर्ता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः कोई भी शोध कार्य अपने आप में पूर्ण नहीं होता है। शोध कार्य में रह गयी कमिया भविष्य में वर्तमान से सबंधित कमियों का अध्ययन करने का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः भविष्य में निम्नलिखित विषयों के अर्न्तगत शोध कार्य किया जा सकता है।

- ❖ प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले तक ही सीमित रखा गया। राज्य के अन्य जिलों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- ❖ वर्तमान अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्याथियों तक सीमित है। भावी शोधकर्ता उच्च माध्यमिक , स्नातकस्तर ,स्नातकोतर स्तर के विद्यार्थियों पर यह अध्ययन कर सकते है।
- ❖ वर्तमान शोध सरकारी ओर गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के नियमित विद्यार्थियों पर किया गया है। भावी शोधकर्ता स्वयपाठी विद्यार्थियों पर कर सकता है।
- ❖ प्रस्तुतशोध सामूहिक रुप से छात्र–छात्राओं का एक अध्ययन है। इसे संकाय भिन्नता के आधार पर भी किया जा सकता है।
- ❖ व्रस्तुत शोध सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों का है। इसे नवोदय व केन्द्रीय विद्यालयों का न्यादर्श लेकर भी किया जा सकता है।
- ❖ अध्ययन आदतों शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले पिभिन्न घटकों को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ विभिन्न विषयों पर शैक्षिक उपलब्धि एंव अध्ययन आदतों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ वर्तमान अध्ययन में सभी जातियों के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जा सकता है, अतः यह अध्ययन अनुसूचित जाति और पिछड़ा वर्ग के विद्याार्थियो पर भी किया जा सकता है।
- ❖ वर्तमान अध्ययन एक आयु वर्ग के विद्यार्थियों पर किया गया है। भविष्य में अलग अलग आयु वर्ग के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षो की जॉच करने हेतु विस्तृत न्यादर्श लेकर इस शोध को लिया जा सकता है।

13 निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन प्राप्त शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया है। वर्तमान मे शिक्षा नवीन शोधों व

प्रविधियों का संकलन किया गया है परन्तु यह हमारी विडम्बना है कि बालक के सर्वागीण विकास के लिये हम तत्पर नहीं है। तभी उसका प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि ओर अध्ययन आदतों पर पड़ता है। जिसके परिणामस्वरुप बालक के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पिकास पर प्रभाव पड़ता है। अतः यह शोध शिक्षको , अभिभावकों ,प्रशासकों और विद्यालय के संस्था प्रधान को मार्गदर्शन करेगा कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी के सम्बन्ध में प्रोत्साहित कर सकेगे। जिससे कि विद्यार्थियो का सामाजिक, नैतिक , चारित्रिक ओर मनोवैज्ञानिक विकास किया जा सके।